प्रवचन

परमहंस श्री हंसानंद जी सरस्वती दण्डी स्वामी जी

विषय तालिका

CD # 23 * OCT-NOV 2008 *

SN	Title	Min	Coding			Contents	
1	1	44				गीता - अ०६/६-१३	9
2	2	44				गीता - अ०६/१३	10
3	3	39				गीता - अ०६/१३-१६	11
4	4	30				कैप्सूल नारद-सनतकुमार सम्वाद भूमा तत्व निरूपण	
5	5	44				गीता - अ०६/२२-३३	12
6	6	38				त्रिकांडमय वेद, माया सृष्टि और ब्रह्म	
7	7	42				गीता - अ०६/२८-३४	13
8	8	32				कैप्सूल स्थूल-सूक्ष्म-कारण शरीर, ३ अवस्थायें-उनके स्वामी/भोक्ता, पाँच कोष और आत्मा का स्वरूप निरूपण	
9	9	*48*				गीता - अ०६/३४ अ०६ इति, भक्ति-समर्पण से क्रममुक्ति एवं ज्ञान से सद्यमुक्ति दो ही मार्ग	14
10	10	47				गीता - अ०६/३४ अ०६ इति	15
11	11	35				दृग-दृश्य विवेक, चिदाभास की सात अवस्थाऐं	
12	12	46				गीता - अ०६/३४ अ०६ इति	16
13	13	32				कैप्सूल	
14	14	46				गीता - अ०१०/१-११	1
15	15	35				गीता - अ०१०/६-११	2
16	16	33				झूठ से झूठ की निवृति-सत्य ही शेष रह जाता है, पाँच भ्रान्तियाँ, जीव जगत और ईश्वर	1
17	17	50				गीता - अ०१०/१२-१५	3
18	18	58				सामवेद छा०उ० / अ०६- नारद सनतकुमार सम्वाद	
19	19	31				ब्रह्म का नि०नि० एवं स०सा० निरूपण + शुक्ल यजुर्वेद अन्नपूर्णोपनिषद पंच भ्रम	2
20	20	57				नवधा भक्ति	
21	21	37				शुक्ल यजुर्वेद अन्नपूर्णोपनिषद एवं पंच भ्रम -	3
22	22	40				गीता - अ०१०/१२-१८ + १६-२०	4
23	23	16				शुक्ल यजुर्वेद अन्नपूर्णोपनिषद एवं पंच भ्रम - १ भेद-भ्रान्ति २ कर्ता-भोक्ता भ्रान्ति - सूक्ष्मदेह का आत्मा में आरोप	4
24	24	52				गीता - अ०१०/२०-३२	5
25	25	31				शुक्ल यजुर्वेद अन्नपूर्णोपनिषद एवं पंच भ्रम - ३ संग-भ्रान्ति-सच्चि० आत्मा के गुणों का तीनों देह में आरोप	5
26	26	44				गीता - अ०१०/३५-४२ अ०१० इति	6
27	27	34				गीता - अ०११/१-१६	a
28	28	29				शुक्ल यजुर्वेद अन्नपूर्णोपनिषद एवं पंच भ्रम - ३ संगभ्रान्ति-आत्मा तीनों देह से असंग है, वडाननू की कथा	6
29	29	47				गीता - अ०११/१५-५५ अ०११ इति	b
30	30	34				पंच भ्रम - ४ विकारित्व भ्रम-जगत ब्रह्म का विवर्त है,दृ०रज्जु सर्प ५ कारण ब्रह्म से कार्य जगत भिन्न+सत्य है-दृ०स्वर्णाभूषण	7
31	31	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
32	32	32				सरस्वती रहस्योपनिषद - जगत के ५ अंश - अस्ति भाति प्रिय	1
33	33	00				प्रवचन अनुपलब्ध	NA
34	34	29				सरस्वती रहस्योपनिषद - जगत के ५ अंश - अस्ति भाति प्रिय	2
35	35	40				गीता - अ०१३/१-११	a
36	36	31				सामवेद महोपनिषद - ज्ञान की ७ भूमिकाऐं	1
37	37	38				गीता - अ०१३/१२-१७ अ०१३ इति	B
38	38	26				सामवेद महोपनिषद - ज्ञान की ७ भूमिकाऐं, तनमानसी-सविकल्प व सत्त्वापत्ति-निर्विकल्प समाधि ::स्वप्नवत् अवस्था	2